वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा के स्नातक पार्ट-I अर्थशास्त्र विभाग के द्वितीय पत्र के पाठ्यक्रम (Syuabus) के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा प्रणाली स्वर्णमान (Global Standard) पर प्रकाश डाला जा रहा है।

What is International Gold Standard? Describe its Merits and Demerits.

अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान क्या है? उसके गुण-दोषों का विवरण दीजिए।

⇒ मुद्रा प्रणाली में स्वर्णमान (Gold Standard) का प्रचलन प्रायः ब्रिटिश ~~सम्रा~~ साम्राज्य के लगभग 1870 को शुरू हुआ और प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भ काल 1914 से 1918 तक चला। लेकिन प्रथम विश्वयुद्ध के बाद प्रचलन में भिन्न-भिन्न तरह की बाधायें उत्पन्न होने लगी, फिर भी प्रयास किया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा प्रणाली के रूप में स्वर्णमान (Gold Standard) को ही पुर्नस्थापित किया जायें किन्तु यह सम्भव नही हो पाया क्योंकि युद्ध के बाद देश में मुद्रास्फीति फैली हुई थी, आर्थिक अवस्थाओं में संतुलन नहीं था और मौद्रिक क्षेत्र में अराजकता की स्थिति थी। प्रत्येक देश सामान्य परिस्थिति कायम करने के लिए प्रयत्नशील था। मुद्रास्फीति हो जाने पर ~~लोग~~ लोगों ने स्वर्णमान के गुणों को स्वीकार किया जिसमें मुद्रा का विकास और संकुचन अपने इच्छानुसार नहीं हो सकता था, और इस कारण मूल्यस्तर में स्थिरता रहती थी। इसलिए युद्ध के बाद विभिन्न

देशों ने स्वर्णमान को पुनः स्थापित करना चाहा। पर इस सम्बन्ध में सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि घरेलू मुद्रा का सोने के रूप में मूल्य किस प्रकार निश्चित किया जाये। इसमें वास्तविक कठिनाई यह थी कि प्रत्येक देश में मूल्य में होने वाली वृद्धि एक समान नहीं थी।

वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान पूर्णरूपेण यानि प्रत्यक्ष रूप से चलायमान नही है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आज भी स्वर्ण विनिमय का साधन है। वैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्णमान (Gold Standard) को क्राउथर ने स्पष्ट किया है :- प्रथम उद्देश्य की पूर्ति करता है, तो उसे राष्ट्रीय या घरेलू स्वर्णमान कहते है, और जो केवल दूसरे उद्देश्य की पूर्ति करता है, उसे अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान कहते है। जो न जिसे नीचे स्पष्ट किया जा रहा है -

क्राउथर (Crowther) के शब्दों मे, "घरेलू स्वर्णमान की प्रमुख विशेषता चलन की मात्रा और स्वर्ण-कोषों के बीच एक निश्चित समानुपाती सम्बन्ध की स्थापना करना है। अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान का कार्य मुद्रा को स्वर्णमान में परिवर्तित करना है, अर्थात् इसकी मुख्य विशेषता चलन की इकाई और स्वर्ण की इकाई के बीच निश्चित समानुपाती सम्बन्ध स्थापित करना है।"

जब विश्व के अनेक देश अपनी मुद्रा का मूल्य स्वर्ण की एक निश्चित मात्रा में व्यक्त करते हैं, तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान कहते है।

The cardinal point in the Domestic Gold Standard is clearly the proportion of volume enforced by law between the gold reserve and the currency. The essence of the International Gold Standard is the convertibility of the currency into gold that is the fixed proportion of value between a unit of gold and a unit of currency.

— Crowther

इन परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि स्वर्णमान के अन्तर्गत स्वर्ण मूल्य-मापन (Measurement of value) का काम करता है और देश की मुद्रा का स्वर्ण के साथ एक निश्चित सम्बन्ध रहता है। यह आवश्यक नहीं है कि स्वर्णमान में जो सिक्के चलन में हैं, वे भी स्वर्ण के हों; पर यह आवश्यक है कि मुद्रा का परिवर्तन स्वर्ण में हो। स्वर्णमान में जो मुद्रा चलन में है, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो सकती है। स्वर्णमान में सांकेतिक मुद्रा या पत्र-मुद्रा का भी चलन हो सकता है, पर वह मुद्रा स्वर्ण में परिवर्तित हो सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान के गुण- दोष

गुण (Merits) - अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान के प्रमुख गुण निम्नांकित है-

i) अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय का माध्यम- विनिमय के माध्यम के रूप में कोई भी देश स्वर्ण को सहर्ष स्वीकार कर सकता है। स्वतन्त्र रूप में स्वर्ण के आयात-निर्यात के कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा अन्तर्राष्ट्रीय भुगतान की भी सुविधा हो जाती है। स्वर्ण के आधार पर कोई भी देश, किसी भी देश से, अपने इच्छानुसार तथा आवश्यकतानुसार वस्तुएँ खरीद सकता है। यह सुविधा देश की मुद्रा के रूप में सम्भव नही है।

कैण्ट (Kent) के मतानुसार, "मुल्य के अन्तर्राष्ट्रीय मापक के रूप मे स्वर्णमान बहुत बड़ी सेवा करता है, क्योंकि वह विभिन्न देशों की वस्तुओं की परस्पर तुलना करना सम्भव कर देता है। इस प्रकार, विभिन्न विदेशी बाजारों में पारस्परिक क्रय-विक्रय करने की सापेक्षिक उपयोगिता का सरलता से निश्चय किया जा सकता है।"

ii) विदेशी विनिमय-दरों में स्थिरता - अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण-मुद्रामान के अन्तर्गत प्रत्येक देश अपनी मुद्रा का मोल विशुद्ध सोने की एक निश्चित मात्रा में निर्धारित करता है। देश का केन्द्रीय बैंक तक पूर्व निर्धारित दर पर स्वर्ण के क्रय-विक्रय का दायित्व स्वीकार करता है। ऐसी अवस्था में एक देश की मुद्रा का मोल, अन्य देश की मुद्रा के रूप में सरलतापूर्वक नापा जा सकता है।

1931 ई० में, अवमूल्यन के पूर्व, इंग्लैंड में स्वर्ण के रूप में, पौंड-स्टर्लिंग का मोल 113.0015 ग्रेन निश्चित किया गया था, और बैंक ऑफ इंग्लैंड इस मूल्य पर एक निश्चित मात्रा में, स्वर्ण बेचने के लिए तैयार था। दूसरी ओर, 1933 ई० में, अवमूल्यन के पूर्व अमेरिका में डालर का मोल स्वर्ण के रूप में 23.22 ग्रेन निश्चित किया गया था। इसलिए, ब्रिटिश मुद्रा तथा अमेरिकन मुद्रा के बीच विनिमय की दर का वही अनुपात होगा जो अनुपात 113.0015 ग्रेन तथा 23.22 ग्रेन स्वर्ण सोने के बीच था।

इस सम्बन्ध में ग्रेगरी (Gregory) का कथन है कि "व्यवसाय और वाणिज्य की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान का सबसे बड़ा लाभ यह है कि जब तक यह कार्य करता रहता है, विनिमय-दरों में होने वाले परिवर्तन समाप्त हो जाते है।"

iii) अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों में स्थिरता - अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान के अन्तर्गत स्वतन्त्र व्यापार की नीति का पालन होता है। इसलिए वस्तुओं के मूल्यों में (स्वर्णमान देशों में) समानता रहती है। यदि मूल्यों में परिवर्तन हो जाता है, तो कुछ समय के बाद स्वर्ण के आयात-निर्यात द्वारा वह परिवर्तन दूर हो सकता है।

iv) स्थिरता - इसके अन्तर्गत चलन मुद्रा और साख की मात्राओं में स्थिरता रहती है। मुद्रा के संकुचन या प्रसार की मात्रा में, स्वर्णकोष की मात्रा में होने वाले परिवर्तन से अधिक परिवर्तन नहीं हो सकता।

दोष (Demerits) – पर अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान के कुछ दोष भी हैं –

i) मुद्रासंकुचन से प्रभावित – इस मान के अन्तर्गत मुद्रासंकुचन की स्थिति का उत्पन्न हो जाना सरल और सम्भव है। जिस देश में स्वर्णकोष की मात्रा कम हो जाती है, वह मुद्रासंकुचन करने के लिए विवश हो जाता है। पर दूसरी ओर यदि किसी देश के पास स्वर्णकोष की राशि में वृद्धि हो जाये, तो मुद्रा के प्रसार के लिए वह विवश नहीं है। इस प्रकार, यह मान मुद्रासंकुचन द्वारा प्रभावित है।

अन्त: युद्धकाल (Inter-war Period) में इंग्लैंड में, स्वर्ण का निर्यात होने तथा स्वर्णकोष में कमी होने के कारण, आयसंकुचन (Income deflation) तथा बेरोजगारी की अवस्था उत्पन्न हो गयी थी, पर अमेरिका में स्वर्ण का आयात होने तथा स्वर्णकोष में वृद्धि होने पर भी मुद्राप्रसार (Inflation) की स्थिति नहीं उत्पन्न हुई थी।

ii) एक देश का प्रभाव अन्य देशों पर – इस मान के अन्तर्गत स्वर्ण के आयात या आगमन से एक देश का आर्थिक संकट दूसरे देश को हस्तांतरित हो जाता है।

मान लीजिये कि A देश में आर्थिक स्थिरता तथा शान्ति की स्थिति है, पर B देश में अशान्ति तथा आर्थिक अस्थिरता है। इसलिए लोगों की सम्पत्ति B देश से A देश में आने लगेगी। परिणाम-स्वरूप, B देश से सोने की राशि A देश को आ जायेगी और इसका बुरा प्रभाव A देश पर भी पड़ेगा। A देश में भी आर्थिक अस्थिरता की अवस्था उत्पन्न हो जाने का भय उत्पन्न हो जायेगा।

विलियन्स (Williams) के मतानुसार, "स्वर्णमान समय-समय

पर एक देश से दूसरे देश मे मन्दी तथा अभिवृद्धि के विस्तार का कारण तथा साधन रहा है।"

iii) आधुनिक युग में अनुपयोगी - यह मान आधुनिक युग में अनुपयोगी है। मुद्रा को स्वचालित क्रिया के सहारे छोड़ देना उचित नहीं समझा जाता।

iv) धातु का अपव्यय - इस मान में स्वर्ण-धातु का सिक्कों तथा कोषों के रूप में अपव्यय होता है। इस मान को हटा दिया जाये, या यह मान समाप्त हो जाये, तो स्वर्णकोषों का व्यवहार अन्य कार्यों तथा औद्योगिक विकास के लिए किया जा सकता है।

v) अव्यवस्था का कारण - स्वर्णमान के कारण कभी-कभी अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। स्वर्ण के असमान वितरण के कारण मुद्राप्रसार तथा मुद्रासंकुचन की अवस्थाएँ उत्पन्न हो जाती थीं।

रॉबर्टसन (Robertson) का मत रहा है "कि पुराने-जमाने में इस पीली धातु को मुद्रा के रूप में चुना गया था, पर इस पर मुद्रा का मोल निश्चित करना उचित नहीं है।

vi) विनिमय-स्थायित्व तथा मूल्य-स्थायित्व में समन्वय का अभाव - इस मान के अन्तर्गत विनिमय तथा मूल्यों में एक साथ स्थिरता रखना सम्भव नहीं है। स्वर्ण के आयात-निर्यात द्वारा मुद्रा के बाह्य मोल तथा विनिमय-दरों को स्थिर रखा जा सकता है, पर आन्तरिक मूल्य में स्थिरता रखना सम्भव नहीं हो पाता। स्वर्णमान की असफलता का यह एक प्रधान कारण था कि मूल्य-स्थायित्व तथा विनिमय-स्थायित्व में समन्वय

की स्थिति नहीं स्थापित हो पायी थी।

vii) विकासशील अर्थ-व्यवस्था के लिए अनुपयुक्त —
यह व्यवस्था ~~विकासी~~ विकासशील अर्थ-व्यवस्था (Developing economy) के लिए ~~उपयुक्त नहीं है।~~ उपयुक्त नहीं है। इसके अन्तर्गत बिना स्वर्णकोष में वृद्धि हुए मुद्रा की मात्रा में वृद्धि करना सम्भव नहीं हो पाता है। इस व्यवस्था में आर्थिक योजनाओं को लागू करने में कठिनाई होती है, क्योंकि योजना के अन्तर्गत आयात-निर्यात को नियंत्रित करना आवश्यक है, पर ऐसा करना स्वर्णमान के नियम के विरुद्ध हो जाता है।

निष्कर्ष :-
अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान के गुण-दोषों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि आज के युग में पत्रमुद्रा का प्रचार होता है और उस पर लोगों का विश्वास भी है। पत्रमुद्रा सस्ती है और सुविधाजनक भी।

इसलिए स्वर्णमान को पुनः जीवित करना कठिन है। इन सभी शर्तों का पालन सम्भव नहीं है। इसलिए अच्छा यही है कि स्वर्णमान को ~~उस~~ अपनी कब्र में शान्ति से सोने दिया जाय - उसे छेड़ा नहीं जाय, क्योंकि आज के विश्व में शायद उसकी आवश्यकता नहीं है या आज के युग के लिए स्वर्णमान अनुपयुक्त है।

संदर्भ सूची :-

1) मुद्रा बैंकिंग एवम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, राजस्व - वैश्य एवम सुन्दरम
2) मुद्रा बैंकिंग, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन - एम. ऐल. सेठ

प्रो (डा०) धीरेन्द्र कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग
डी. के कालेज डुमराँव, बक्सर
मोबाइल नं० :- 9430006733
ई-मेल :- dksinghvksu@gmail.com